तीतुस

तीतुस को लिखा गया पौलुस का पत्र

1 परमेश्वर के सेवक और यीशु मसीह के
प्रेरित पौलुस की तरफ़ से मुझे इसलिये
भेजा गया ताकि मैं परमेश्वर के चुने हुए
लोगों को विश्वास और सच्चाई की समझ तक
पहुँचा सकूँ जिस से वे एक सही[a] जीवन जी
सकें। 2 उस सदा के जीवन की उस आशा
में जिस का वायदा परमेश्वर ने जो झूठ नहीं
बोल सकते दुनिया के आरम्भ से पहले किया
है। 3 परमेश्वर और मुक्तिदाता के आदेश के
अनुसार जिस सुसमाचार को ऐलान करने का
काम मुझे दिया गया उसे एक सही समय पर
इतिहास में दिया गया।

4 तीतुस को जो एक विश्वास की
सहभागिता में मेरा सच्चा बेटा हैः परमेश्वर
पिता और हमारे मुक्तिदाता मसीह यीशु से
कृपा और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

5 मैं इसलिए तुम्हें क्रेते में छोड़ आया
था कि तुम बाकी बातों को सुधारो और
मेरी आज्ञा के मुताबिक हर शहर में अगुवों
को ठहराओ। 6 अगुवों[b] को बिना किसी
आरोप का और एक पत्नी का पति और
संयमी होना चाहिए। इन के बच्चों को मुक्ति
का अनुभव भी होना चाहिए। 7 किसी भी
रखवाले[c] को परमेश्वर का भण्डारी होने
की वजह से निर्दोष होना चाहिए। ज़िद्दी,
गुस्सैल, शराबी, झगड़ालू, पैसों का लोभी
नहीं होना चाहिए। 8 और आवभगत करने
वाला भलाई और अच्छाई का चाहने वाला,
सही सोच वाला, खरा, पवित्र और संयमी
भी। 9 उसे विश्वसनीय वचन को थामे रहना
चाहिए जैसा उसे सिखाया गया है, ताकि सही
सिद्धान्त की मदद से, वह लोगों को सिखा
सके, और वचन के विरोध में बहस करने
वालों को यकीन दिला सके।

10 बहुत से बेलगाम लोग बहस करने वाले
और धोखा देने वाले हैं, खासकर खतना
वाले लोगों में से। 11 इन के मुँह बंद किये
जाने चाहिए। ये लोग अपने फ़ायदे के लिए
वह सब सिखाते हैं, जो सिखाना नहीं चाहिए
और पूरे के पूरे खानदान बर्बाद कर डालते
हैं। 12 उन्हीं में से उनके एक भविष्यद्वक्ता
ने कहा, “क्रेती लोग हमेशा से झूठे, दुष्ट
पशु, आलसी और पेटू होते हैं।” 13 यह बात
सच है। इसलिए उन्हें अच्छी तरह से डाँटो,
ताकि वे अपने विश्वास में मज़बूत रहें।
14 यहूदी कथा-कहानियों और उन मनुष्यों
की आज्ञाओं पर ध्यान न दें, जो सच्चाई से
भटक चुके हैं। 15 जो लोग शुद्ध हैं, उनके
लिए सब कुछ शुद्ध है, लेकिन जो अशुद्ध और
अविश्वासी हैं, उनके लिए कुछ भी शुद्ध नहीं
है। उनकी बुद्धि और विवेक दोनों ही अशुद्ध
हैं। 16 वे तो मुँह से परमेश्वर को जानने का
दावा करते हैं, लेकिन उनके कामों को देख
कर ऐसा नहीं लगता है। वे घिनौने, आज्ञा न
मानने वाले और अच्छे कामों के लायक ही
नहीं हैं।

2 परन्तु जो बातें सही शिक्षा के अनुसार हैं,
तुम उन्हीं को कहा करो। 2 बुज़ुर्ग लोगों
को गंभीर, आदरणीय, संयमी, विश्वास,

---

[a] **1.1** खरा [b] **1.6** प्राचीनों [c] **1.7** अध्यक्ष

प्रेम और धीरज में मज़बूत होना चाहिए।
3 उसी तरह बुज़ुर्ग महिलाएँ भी व्यवहार में
आदरणीय, बदनामी न करने वाली, शराब
से परे रहने वाली और अच्छी बातें सिखाने
वाली हों 4 ताकि वे जवान महिलाओं को
सिखाएँ कि वे पतियों और बच्चों से प्रेम करने
वाली हों। 5 संयमी, पवित्र घर का देख-भाल
करने वाली, भली और पति की आज्ञा मानने
वाली बनें, ताकि प्रभु के संदेश की बदनामी
न हो।
6 इसी तरह से जवान लोगों को संयमी
बनने को कहो। 7 हर दायरे में दूसरों के
लिए अच्छे नमूना बनो। शिक्षा में ईमानदारी,
गंभीरता, पवित्रता, 8 सही बोल-चाल, जिसे
कोई खराब न कह सके ताकि तुम्हारे विरोधी
शर्मिन्दा हों और तुम्हारे खिलाफ़ कहने के
लिए उनके पास कुछ भी न हो।
9 नौकरों को आदेश दो, कि वे अपने-अपने
मालिक की मानें और उन्हें हर बात में पूरी
तरह खुश रखें और पलट कर जवाब न दें।
10 चोरी न करें लेकिन विश्वसनीय हों, ताकि
हमारे परमेश्वर और मुक्तिदाता की शिक्षा
की सुन्दरता बढ़े।
11 क्योंकि परमेश्वरीय कृपा जिस के
कारण मुक्ति है, सभी लोगों के लिए प्रगट
हुई है, 12 और हमें सिखाती है कि हम दुष्टता
और दुनिया की अभिलाषाओं को छोड़कर,
गंभीरता, खराई और परमेश्वरीय स्वभाव के
साथ वर्तमान युग में जियें, 13 और बड़ी आशा
अर्थात् परमेश्वर और मुक्तिदाता यीशु के
महिमामय दूसरे आगमन का इन्तज़ार करते
रहें। 14 जिन्होंने अपने आपको हमारे लिए दे
दिया ताकि हमें हर तरह की दुष्टता से छुड़ाएँ
और पवित्र करके अपने लिए खास लोगों को
तैयार करें जो अच्छे काम करने में सरगर्म हों।
15 इन बातों को सिखाया करो, हिम्मत
बढ़ाओ और अधिकार के साथ डाँटो। तुम्हें
कोई तुच्छ न समझने पाए।

3 जो लोग शासन करते हैं या अधिकारी
हैं, उनके प्रति आज्ञाकारी होने और
अच्छे काम करने को तैयार रहने के लिए
लोगों से कहो 2 लोग किसी की बुराई न करें,
झगड़ालू न हों, लेकिन कोमल स्वभाव रखें
और दूसरों के साथ नम्रता से पेश आएँ।
3 क्योंकि पुराने जीवन में हम भी बेवकूफ़,
आज्ञा न मानने वाले, धोखे में, तमाम
अभिलाषाओं में और सुखविलास की चाह
रखते हुए, कड़वाहट, ईर्ष्या और नफ़रत
की ज़िन्दगी जीते थे। 4 लेकिन जब हमारे
परमेश्वर और मुक्तिदाता की दया और
मोहब्बत लोगों के लिए प्रगट हुयी, 5 तो
उन्होंने हमें मुक्ति दी जो हमारे धर्म-कर्म से
नहीं लेकिन उन्हीं की कृपा द्वारा नए जन्म के
स्नान और पवित्र आत्मा के नए बनाने से थी।
6 जिसे उन्होंने बहुतायत से हमारे मुक्तिदाता
यीशु द्वारा हम पर उण्डेली। 7 इसलिए कि
उनकी कृपा से धर्मी[a] ठहराए जाने से हम
अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस
बनें।
8 यह बात सच है और मैं चाहता हूँ कि,
तुम ये बातें लगातार ऐलान करो ताकि जिन
लोगों ने परमेश्वर पर भरोसा कर लिया है,
वे भले कामों में लगे रहें। ये बातें अच्छी हैं
और लोगों के लिए फ़ायदेमंद हैं।
9 लेकिन बेवकूफ़ी के विवाद, वंशावलियों
और व्यवस्था[b] के मतभेद वाले विषयों और
झगड़ों से दूर रहें, जो बिना लाभ के और
बेकार हैं। 10 ऐसे इन्सान से दूर रहो, जो एक
दो बार मना किए जाने के बावजूद सच्चाई

[a] **3.7** निर्दोष [b] **3.9** नियमशास्त्र

के साथ झूठ की मिलावट में बना रहता है।
11 यह जान लो कि ऐसा व्यक्ति टेढ़ा है,
गुनाह में है और खुद ही दोषी ठहर चुका है।
12 जब मैं अरितिमास या तुखिकुस को
तुम्हारे पास भेजूँ, निकापुलिस में मुझ से भेंट
करने की हर कोशिश करना, क्योंकि मैंने
सर्दियों में वहाँ रहने का इरादा किया है।
13 यन्नेस वकील, और अपुल्लोस को उनकी
यात्रा पर जल्दी भेजना, ताकि उन्हें किसी
चीज़ की कमी न हो।
14 हमारे लोगों को भी
सीखना चाहिए कि भले कामों में लगे रहें,
ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सही कामों
में लगे रहना सीखें, ताकि उनका जीवन
निकम्मा न हो।
15 मेरे साथियों का तुम्हें आशीर्वाद, और
जो हम से प्रेम करते हैं, उन्हें आशीर्वाद।
आमीन

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com